4 - कविता के प्रति लगाव से पहले उसके बाद अकेलेपन के प्रति लेखक की धारणा में क्या बदलाव आया ?

उत्तर - लेखक ने स्वयं स्वीकार किया है कि, शब्दों से खेलते हुए मुझे की शक्तियाँ प्राप्त हुई है। पहले अकेले खेतों में काम करते हुए तथा पशु चराते हुए अकेलापन खटकता था। किसी की आवश्यकता महसूस होती थी कि हँसी-मजाक करके अकेलेपन को बाँटा जा सके लेकिन कविता के लगाव के बाद मुझे लगने लगा कि मैं जितना अकेला रहूँ उतना ही अच्छा है। अकेला होने पर लेखक कविता को ऊँची आवाज में गा सकेगा, अभिनय कर सकेगा तथा नृत्य भी कर सकेगा। इस प्रकार लेखन में रुचि जगने पर लेखक की धारणा बदल गई।

5 - आपके ख्याल से पढ़ाई-लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ताजी राव का रवैया सही था या लेखक के पिता का ? तर्क सहित उत्तर दें।

उत्तर - मेरे विचार से पढ़ाई-लिखाई के संबंध में लेखक के पिता का रवैया पूर्णतः गलत था। पिता ने अपनी जिम्मेदारियों को स्वयं न निभाकर सारे काम अपने पुत्र के हवाले कर दिया, पुत्र को आगे पढ़ने से रोक दिया तथा दत्ताजीराव (गाँव के मुखिया) को यह गलत दलील दी कि पुत्र का मन पढ़ाई में नहीं लगता। वह पढ़-लिख कर सुधरने के बजाय बिगड़ रहा है, फिल्में देखता है और इधर-उधर घूमता है। दत्ताजी राव ने इन सभी बातों का निराकरण करते हुए कहा कि पढ़ाई व्यक्ति को संस्कारित करती है। यदि

उसने भूलवश कोई गलती की भी है, तो वह सुधार लेगा। दत्ताजीराव का कहना पूर्णतः सही था कि वह पढ़-लिखकर बैरिस्टर भले न बने किंतु एक शिक्षित इंसान बन जाएगा।

लिखित प्रश्न -

1- पिताजी किन-किन शर्तों पर पुत्र को आगे पढ़ाने के लिए राजी हुए?
उत्तर- पिताजी अपने पुत्र को आगे पढ़ाने के लिए उसके सामने तीन शर्तें रखते हैं -
(i)- दिन निकलते ही लेखक खेत पर हाजिर हो जाएगा तथा ग्यारह बजे तक खेतों में पानी लगाएगा।
(ii) - खेत से सीधा पाठशाला जाएगा तथा छुट्टी होते ही घर में बस्ता रखकर एक घंटा पशुओं को चराएगा।
(iii)- जब कभी खेतों में ज्यादा काम होगा तो वह पाठशाला में गैरहाजिरी लगाएगा।

2- 'जूझ' कहानी के प्रमुख पात्र के स्वभाव की विशेषताएँ बताइए?
उत्तर- जूझ कहानी के प्रमुख पात्र के स्वभाव की निम्न विशेषताएँ हैं -

(i) पढ़ने की ~~ललक~~ - लेखक की पढ़ने की तीव्र इच्छा है। अपने दादा के डर की वजह से वह पाठशाला जाने की बात भी कहने की हिम्मत नहीं जुटा पाता। अतः माँ के साथ योजना बनाकर गाँव के मुखिया की सहायता लेता है

(ii) - दूरदर्शी - लेखक जानता है कि मुखिया के आदेश का पालन दादा (पिता) को करना ही पड़ेगा अतः झूठ के सहारे का प्रस्ताव भी वह अपनी ओर से स्वयं करता है। लेखक दूरदर्शी है इसलिए वह यह भी जानता है कि पढ़-लिखकर ही नौकरी मिल सकती है अथवा कोई कारोबार किया जा सकता है।

(iii) - परिश्रमी एवं लगनशील - लेखक कठिन परिश्रमी है। वह सुबह ही खेत पर चला जाता है। ग्यारह बजे तक खेतों पर काम करने के बाद पाठशाला जाता है। वहाँ से लौटकर घर पर बस्ता रखकर पशु चराने जाता है। सारा दिन कार्य में लगा रहता है और सारे काम को पूरी तन्मयता से करता है। अपनी मेहनत के बलपर ही वह शीघ्र ही कक्षा का होशियार बच्चा बन जाता है। वह मराठी भाषा का अच्छा ज्ञान प्राप्तकर कविताएँ भी लिखने लगता है।